തിരുത്തി...................
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 948 **Participant Code:** 038

विषय : भारत मे विदेशी विश्वविद्यालय

शिक्षा - भारत की या विदेश की?

इस दुनिया के सारे देशों को देखने पर हमे इस बात का ~~एस~~ एहसास होता है की हमारे भारत देश एक है, पर ~~अलग~~ अलग-अलग लोगों से, अलग अलग खाने। यानी सब मे अलग, फिर भी हमरा भारत सबको ~~एक~~ सब देशों को एकता और भाई-चारा सिखाते है।

भारत वासी सारे दुनिया वालो को अपना मानते थे। हमारे यह विदेशी लोग आकर भारत की खूबसूरती देखने के साथ-साथ यहाँ उन्होने कुछ छोडकर गए- स्कूल और विश्व विद्यालय।

- भारत मे विश्व-विद्यालय की आगमन

बहुत वर्षों पहले, हमारा भारत अंग्रेजो के ताकत मे घुट-घुटकर रहती थी।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

तब अंग्रेजो ने भारत को भी ब्रिटेन, अमेरिका जैसे करने का सोचा। उन्होने भारत मे शिक्षा का इंतज़ाम किया क्योकि उन्हे पता था की अगर शिक्षा मिले तो ~~उ~~ भारत के लोगों को आसानी से स्वाबू मे लाया जा सकता था। इस कारण उन्होने भारत मे विद्यलयों का अवसर भारतीयों को दिया ताकी वो पढकर उनकी तरह बने।

भारतीय शिक्षा संविधान

अपना भारत सतियो पहले, अंग्रेजों से भी बहुत पहले शिक्षा को ~~अ~~ अमूल्य मानते ~~है~~ थे। उस समय मे जहाँ महाभारत के ~~वि~~ वीर योद्दावों ने, रामायण ~~म~~ के राजकीय परिवारों ने और यहाँ तक आम बच्चों को भी पुराने भातीय शिक्षा संविधान- गुरुकुल से शिक्षा हासिल किया करते थे।

इस संविधान मे बच्चें अपने माँ बाप से अलग दूर अपने गुरु के घर मे सारे बच्चे

एक साथ रहकर गुरु की हर बात मानकर उनसे शिक्षा हासिल करते था।.

◉ गुरुकुल का अच्छा वश:

गुरुकुल ~~र~~ की हर शिक्षा उनकी जीवन मे हर पल उनकेलिए उपयोग होता रहता है। प्रकृति मे रहकर हर चीज़ को एहसास करके प्रकृति से जीवन गुज़ारकर प्रकृति की इज़्जत करना। गुरु के साथ रहने पर गुरु शिष्य ~~का~~ संबध गहरा होता है जिसमें गुरु का आदर, सम्मान करना सिखाते है। इसमे एक ~~व~~ ~~तरह~~ तरह से लडकों को हर काम खुद से करना और जो आज के समाज मे 'लडकियों का काम बताते है वो सिखते है।

◉ गुरुकुल का बुरा वश:

गुरुकुल मे बुरा वश इसलिए क्योंकी यह शिक्षा केवल ~~लक~~ लडकों तक सीमीत था। लडकिया घर मे बैठी होती है और काम करती है।

विदेशी शिक्षा संविधान

विदेशी शिक्षा संविधान, जो की आज भी हर स्कूल पालन करता है। इस शिक्षा मे चार बंद दिवारों मे हर क्लास के बच्चे होते है जो एक ही उमर होते है एक साथ आते है, एक अध्यापिका उन्हे इतने समय से इतने समय तक पढाकर जाते है। बच्चों को यूनिफोम, टै, बेल्ट बांधकर बैठकर बच्चे वापस घर आते है।

विदेशी शिक्षा का अच्छा वश

बच्चे अनुशासन सिखते है, धैर्य से हर काम को कर पाते है, याद करने वालो को सही तरह से पढाया जाता है। यूनिफोम वाने से सारे बच्चें एक समान वाला पाठ पढाते है और स्कूल के बाद बच्चे अपने घर जा सकते है।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി........ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

विदेशी शिक्षा का बुरा वश —

इस शिक्षा से केवल उन बच्चों का गुण होता है जिन्हे रट्टा मार कर पढकर याद करते है। इसमे प्रकृति से ना कोई रिश्ता रखते है, सारा वक्त किताबी ज्ञान प्राप्त करते रहते है जिसे या तो लोगो को उसे असली दुनिया मे लागु करना नही आता या तो उसकी अच्छी बाते इस दुनिया मे चाहिए भी नही होता।

विदेशी शिक्षा मे बच्चें अपने अध्यापक से उतना रिश्ता नही रख पाते, शिक्षक एकदम ~~र~~ बोलता है वो हमें करना भी होगा चाहे वो सही हो या गलत, अधिकतर सही बात ही ~~ब~~ वह करते है मगर ऐसे भी किस्से है जो सुनने के बात अध्यापक से भरोसा ही उठ जाता है।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

विदेशी विश्वविद्यालय भारत में

भारत मे कई ऐसे विश्वविद्यालय है जो की अंग्रेजो ने बनवाया। उस समय इसका केवल एक ही बात थी - अंग्रेजो को काम करने और कराने केलिए मज़दूर चाहिए थे जो शिक्षा से भारतिय को ~~अ~~ उनके ओर आकर्षित कर रहा था। कुछ सहमत थे पर कुछ नही।

ऐसे विद्यालय आज पूरे भारत में है जो आज भारतियो को अच्छा और जीवन ~~गुज़~~ गुजारे केलिए नौकरी मिल सके। इस विद्यालय मे विदेशी बाते जैसे अंग्रेजी जोकी ~~भार~~ बाहर का वो और अब सब टेकनीक से बहुत आगे जा पहुंच रही है।

ऐसे विद्यालय भारत के बाहर लोगों को काफी अच्छी पैसो के साथ अच्छा रहन-सहन से बच्चो को जाने का अवसर प्राप्त मिलता है।

विश्वविद्यालय भारत - या विदेशी

आखिर ऐसा क्या है जो भारतीय विश्वविद्यालय से विदेशी मे जाने की लोग सोचते हैं। पहले, लोग सुविधा सोचते है. जिसमे विदेशी मे ज्यादा है भारतीय विश्वविद्यालय के तुलना में। मगर उतना ही खर्च भी आता है विदेशी मे।

अब सब उल्टा होता है - विदेशी विश्व विद्यालय मे किताबी दुनिया के अलावा जिंदगी के हर वो जरूरी चीज़ जैसे को रोड सेफ्टी, जल्दी मे होने वाले हादसो मे इलाज, जैसे साँप का डसना, आग मे शरीर जलना, डूबने वाले को बचाने आदि की शिक्षा बताकर नही बल्की दिखाकर और कराकर सिखता है जिससे जिंदगी बर वो बात हम याद कर सके। अर्तजाल, बैंक, कंप्यूटर, ऐ. ऐ आदि का सही इस्तेमाल सिखाता है।

पर इन सब के बाद सब अपने भारत के मूल्य और संसकृति रखनेवाले लोग बहुत कम है।

भारत अभी भी विकसित देश बनने वाला है, लेकिन कब? हमारे भारत मे आज भी शिक्षा हासिल करना बहुत कठिनाई है, हमारे केरल जैसे राज्य मे 94.6% की विद्या प्रतिमान बताया गया है पर बिहार जैसे देश मे केवल 61% है जो की 74% की लक्ष्मण रेखा से पार ही नहीं हुई।

आखिर क्यू भारत विश्वविद्यालय है पीछे?

आज भी भारत की सुविधाएँ कम है, चाहे वो विश्व विद्यालय हो, अस्पताल हो या कोई और जगह। हमारे यहाँ तो शिक्षा केवल मज़ाक के है। पर आज की यह कड़वा सच्च है की पैस हो तो सब कुछ है। चाहे वो कोलेज की सीट हो या बारवी की पढाई। जो बच्चे पढने मे कमजोर होते है वो पैसे से खुद को दाखील। करता है और कम पढाई से काम करते है जिससे अस्पताल मे तक मेडिकल नेग्लीजेन्स के नाम मौत होती है।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിരുത്തി ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

एक अनुभव है, मेरी माँ एक नर्स थी। वो जब अस्पताल मे काम कर रही थी तो तब एक मरीज आई, कुशीन सिन्ड्रोम था, जो स्टेरोइड से होता है। उनको अचानक साँस लेने मे मुशकिल आई तब दिल पर को बिजली के झटका देना था, तब वहाँ वो सी पी आर यंत्र वहाँ नही था। मेडिकल कॉलेज मे बीटाने का सोचा तो वहाँ के बिस्तर पूरा था। बिना इलाज के सुविधा के कारण वो मरीज मरा था।

भारत का विश्व विद्यालय इन सब चुनौती होने बावजूद बहुत सारे कामीयाब लोगों की पहली पसंद बनकर रही है जैसे पूने की ए.एफ.एम.सी जो की हमारी देश की रक्षा केलिए सैनिक डॉक्टर को जनम देता है, बहुत तेज़ मुखाबला है जहाँ केवल महिलावों केलिए 30 सीट है।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

और जैसे ए ऐ ऐ एम एस, दिल्ली, डो. जीपमर, ऐ ऐ टी डो, एसे बहुत सारे प्रस्तुत 'सर्वकलाशाला' जो की हिन्दी मे विश्व विद्यालय से जाने जाते हैं। जो आज भी बहुत लोगो के लिए मौके का दरवाज़ा खोल देता है, बस थोड़ी सी मेहनत की ज़रूरत है।

जहाँ विदेशी विश्व विद्यालय अपने नए युग की नए आविष्कारों से हमारे इस भारतीय विश्व विद्यालय के सामने है, हमारे भारतीय विद्यालय अपने, गुण और अनुशान से आगे बढ रहा है।

विदेशी विश्व विद्यालया जहाँ ना काबिल को भी नए तरीके से काबिल बनाते हैं और भारतीय विश्व विद्यालय के काबील को बहुत कामियाबी से आगे लाता है। जो हर मुसीबतो को पार कर आगे बडता है वही इस भारत मे टीक पाता है।

जहाँ हमारे विश्वविद्यालय मे कमियों को देखा था वो इसलिए नहीं की हमारा विश्वविद्यालय खराब है, इसलिए अगर वो सुविधावो की कमी जैसे आज के युग की नई टेकनीक का प्रयोग करके अपने भावनावों से देश की समस्यावों को सुलझाना, सड़क की सुरक्षा हमारी और सड़क की, जीवन रक्षा के तरीके। जैसे मामूली से हर चीज़ो को पुरा करके सिखाया जाए तो हमारे भारत मे विदेशी की कोई जरूरत भी नहीं होगी हम पूर्ण रूप से काफी होगें।

उम्मीद करते है की हम भी अपने भारत को विकसीत भारत कहलाएगा। और गर्व से शिक्षा को लेकर और देकर दूसरो के साथ खुशी हम इस भारत मे रह सके।